इतिहास लेखन की वैद्यानिक मार्यादा ''कोशी अंचल के संदर्भ में''

डॉ0 मो0 अरसद*

आंचलिक इतिहास लेखन संबंध में जितने भी उल्लेख मिलते हैं, सबके सब चौथी–पाँचवी शताब्दी के बाद के हैं। सर्वप्रथम विष्णुधमोत्तर पुराण में मिथिला राज्य के रूप में उल्लेखित हुआ है। इस पुराण में मिथिला खण्ड करके एक अलग अध्याय है। इस ग्रंथ की रचना ए पार्गिटर ने छठी–सातवीं शताब्दी में होने की संभावना व्यक्त किये हैं। लगभग इसी समय में रचा गया वाणभट्ट का हर्षचरित्र में ''मिथिलाम पुरी'' के रूप में हर्ष के दिग्विजय के संदर्भ में विवरण आया है। हर्षवर्द्धन के समय मिथिला का राजा कौन था, की चर्चा नहीं आता है। अतः मिथिला, राज्य का नाम था या राजधानी का, स्पष्ट नहीं होता है। मिथिला के कुछ इतिहासकार विष्णुधमोत्तर पुराण में वर्णित त्रिभुक्ति को तिरहुत और तिरहुत को मिथिला का पर्यायवाची मानते हुए विष्णुधर्मोत्तर पुराण में वर्णित सीमा रेखा को मिथिला के सीमांकन करने का उत्साह दिखलाते हैं। जबकि तिरहुत, त्रिभुक्ति और मिथिला अलग–अलग शब्द है और तीनों को मिलाना भाषा शास्त्र की दृष्टि से और इतिहास की दृष्टि से ठीक नहीं है। उत्तरी बिहार में नदियों और उसकी नई–पुरानी धाराओं का जाल बिछा हुआ है। अतः किस नदी के किनारे हुए यज्ञ से तिरहुत नाम पड़ा था–सुनिश्चित करना कठिन है। फिर कतिपय विद्धान तिरहुत उस देश का नाम मानते हैं, जहाँ पुराण (प्रसिद्ध) तीन माहयज्ञ हुए थे– 1. मिथिला के राजा जनक के द्वारा हलकर्षण (खेत को जोतने) का यज्ञ, 2. धनुष यज्ञ (रामायण की कथानुसार सीता के स्वयंवर) और 3. सीता और राम के विवाह का यज्ञ। विदेह अधिपति राजा जनक के पूर्व ही मिथिजन या गण के लोगों द्वारा उत्तरी–पूर्वी सीतामढ़ी के बदलते दरभंगा क्षेत्र में आता है, जहाँ राज और सीता का विवाहोत्सव सम्पन्न होने की बात रामायण में कहा गया है। अतः इस व्याख्या के विश्लेषण से सीतामढ़ी का क्षेत्र भी ''तिरहुत'' के अन्दर नहीं आता है, जबकि भाषाई आधार पर सीतामढ़ी और मुजफरपुर की बोली जानेवाली भाषा मैथिली कहलाती है और मधुबनी तथा तिरहुत का मिलान सही नहीं है। जहाँ तक विष्णु धर्मोत्तर पुराण में मिथिला के सीमाकंन का प्रश्न है, वह उत्साही मिथिजन के पूरोहितों की अपनी ख्याति को बढ़ा–चढ़ा कर दिखलाना ही कहा जा सकता है। फिर ''धीवर'' (मल्लाह) को तीवर से मिलान कर तीवर के आधार पर तिरहुत से मिलान करना तो अपभ्रंश बनने के सारे भाषाई नियमों का उल्लंघन होगा, अतः तिरहुत को मिथिला के सीमा में नहीं आंका जाना चाहिए।

***इतिहास व्याख्ता एल0 एन0 कॉलेज बनगॉव, बी0एन0एम0यू0, मधेपुरा**

रही त्रिभूक्ति की बात। तो कुछ अति उत्साहित विद्धान त्रिभूक्ति को तीरभूक्ति की तरह उपयोग किये हैं। जबकि तीर भूक्ति से भौगोलिक उद्‌बोधन होता है (नदी के किनारे वाला प्रशासनिक भाग) साम्राज्य को भूक्तियों प्रान्त या कमिश्नरी में बाँट कर प्रशासन को व्यवस्थित करने की व्यवस्था चौथी–पाँचवी शताब्दी में महान गुप्त शासकों ने शुरू किये थे। अतः ''तीरभूक्ति'' और त्रिभूक्ति दोनों दो शब्द है। तीरभूक्ति महान गुप्त सम्राट के समय उत्तरी बिहार में नदी के किनारे वाली कोई एक भूक्ति (प्रान्त कमिश्नरी रही होगी, जबकि त्रिभूक्ति उत्तरी बिहार में महान गुप्त शासकों के समय तीन–भूक्तियाँ–वैशाली, विदेह और उत्तर विदेह या कक्ष (बेगूसराय, खगड़िया, सहरसा, मधेपुरा की भूमि) थी। यह चर्चा बेगुसराय के नौलागढ़ मुहर लेख और नारायण पाल के भागलपुर ताम्रपत्र में पढ़ने को मिलता है। इस तरह उत्तरी बिहार के पश्चिम में चम्पारण और पूरब में पूर्ण अरण्य (पूर्णिया) के बीच ही चौथी–पाँचवी शताब्दी में मानव आबादी तथा उसको राजस्व और प्रशासनिक व्यवस्था में गुप्त शासकों ने बांधा था। वाल्मिकी रामायण में दो–दो विदेह की बात किया गया है। एन.एन.डे पहला विदेह के नाम से दरभंगा और मधुबनी के पूरब और दक्षिण में फैले क्षेत्र में पहचानने का प्रयास किये हैं। अतः जिस मिथिला वृहद् पुराण को विष्णुपुराण का अंग मानते हुए मिथिला का सीमांकन किया जाता है, वह नितान्त गैर–ऐतिहासिक है कि मिथिला हिमालय और गंगा की बीच की भूमि थी। पता नहीं ऐसे कई गैर–पुराणों की तथाकथित महिमाओं को प्रचारित करने के लिए लिखे गये होंगे और लिखे जा रहे हैं।

प्राचीन संस्कृत वांग्मय और अभिलेखों में कोशी के प्रवाह क्षेत्र का भव्य रूपांकन हुआ है। वाल्मीकी रामायण, महाभारत, विष्णुपुराण, वाराहपुराण, श्रीमद्‌भागवत, कुमारसंभव आदि में ऋषि–मुनियों के तटवर्ती आश्रम, नदी तीर्थ, संगम स्नान आदि के अतिरिक्त ताम्र अभिलेख (गुप्तकाल) आदि इसके ज्वलंत उदाहरण है। डॉ0 प्रकाश चरण प्रसाद ने इसे ''कुशिक संस्कृति'' का अभिलेखिय प्रमाण कहा है (कोशी महोत्सव)। बिहार और नेपाल की अंतर्राष्ट्रीय सीमा के आर पार वराह क्षेत्र (वराह विष्णु) भारदहर (कंकाली), सखरा (छिन्नमस्ता), आदि एवं भारतीय सीमांत क्षेत्र के गढ़ बरूआरी (दशमहाविद्या), विराटपुर (चण्डी), सिंहेश्वर (शिव), शाहमडहरा (दुर्गा), नयानगर (चन्दनवन), वंशीरौता (भगवती), पिपरा, सिरीपुर–मिलकी, गाजी पैता, बनगाँव – महिषी (तारा), कन्दाहा (सूर्य) वौरनेय (नाग) आदि जैसे पुरावकुल स्थलों की भरमार है, जिनके व्यापक परिप्रेक्ष्य में कोशी की संस्कृति उजागर होगी।

जहाँ तक मिथिला की पूर्वी सीमा निर्धारण का प्रश्न है, इसे कोसी की पश्चिमी धारा जो सहरसा जिला के पश्चिमी छोर से बहती हुई, सहरसा और मधेपुरा के बीच की कोसी को सात धाराओं और बागमती की खगड़िया जिला की धरती से आती हुई को डुमरिया घाट (जहाँ पर कोसी पर पूल है) में समेटा कर बहती हैं कभी कोसी अपनी सातों धारा और बागमती के साथ पसराहा (खगड़िया

जिला का पूर्वी भाग) की झील में गिरती थी और यही गंगा से कोसी और बागमती का संगम होता था। छठी–शताब्दी तक सहरसा से मधेपुरा (जिसके पूरब में कोसी की मध्य धारा बहती थी) के बीच मानव आवास के कोई पुरातात्त्विक प्रमाण नहीं मिलते हैं । इस क्षेत्र की सबसे प्राचीन निवासी मुसहर, तीयर, गोढ़ी आदि मैथिली नहीं बोलती है। इसलिए इस क्षेत्र में सबसे पले पाल राजाओं के आधिपत्य काल में बौद्ध –धर्म का प्रचार हुआ था और पाल सम्राट विग्रहपाल (1050–1090 ई.) के बनगाँव महिषी ताम्रपत्र। (दरअसल में गोढ़ी गाँव से मिला, जहाँ से कुरैशी महोदय ने बुद्ध स्तूप का अवशेष खोद निकाले थे) से ज्ञात होता है कि सहरसा में ब्राह्मण धर्म का प्रचार–प्रसार दसवीं–ग्यारहीं शताब्दी में हुआ था और पाल राजा के अनुदान से ब्राह्माण मंदिर बनाये गये थे। मंडल मिश्र का शंकराचार्य से शास्त्रार्थ की कथा भी मैथिल अभिमान की दन्त कथा है। इसमें सत्यता का लेश मात्र भी संबंध नहीं है। अतः सहरसा और मधेपुरा मिथिला का कभी भी अंग नहीं था। उल्टे पहले पालों ने फिर बंगाल के सेन सम्राटों के दरभंगा (द्वारे वंग) को जीत कर मिथिला के कर्नाट वंश संस्थापक न्याय दकव को कैद कर लिया था। अतः मुस्लिम अधिपत्य के समय मधुबनी और नेपाल की तराई में कर्नाट और दरभंगा तक सेन राजा वल्लासेन का आधिपत्य था। इसलिये मधुबनी वालों का दाबा सही है कि यहीं लोग असल मैथिल हैं।

नेपाल के राजा अंग्रेजों के मिश्र थे। नेपाली सैनिक टुकड़ियाँ भारतीय क्रान्ति को दबाने के लिए ब्रिटिश सैनिकों को सहयोग कर रही थी। नेपाल और भारत सीमा क्षेत्र पर सैनिकों की गहन चौकसी थी, जिससे क्रान्तिकारी नेपाल में प्रवेश न कर सकें। किन्तु मधेपुरा क्षेत्र के जनसहयोग तथा जनसमर्थन के बल पर विद्रोही अन्ततः दुर्गम जंगल तथा पहाड़ियों को लाँघते हुए नेपाल पहुँच गए जबकि सरकार ने 1857 से ही मधेपुरा क्षेत्र में मार्शल लॉ लागू कर दिया। महाक्रान्ति का तूफान रूका। ईस्ट इण्डिया कम्पनी को समाप्त कर इंगलैण्ड की महारानी ने भारत के शासन का भार स्वंय सम्हाल लिया। महारानी की घोषणा में सहृदयता, न्याय तथा समान व्यवहार का आश्वासन था। इस क्रान्ति के बाद की राजनैतिक शून्यता धीरे–धीरे समाप्त होने लगी। यातायात की सुविधा ने जनसाधारण की पारस्परिक दूरियों को कम कर दिया। अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार से लोगों के राष्ट्रीय भावना बलवती होने लगी तथा उनके विचार परिस्कृत तथा परिमार्जित होने लगे। पश्चातत्य देशों के उन्मुक्त वायुमंडल के सम्पर्क से भारतीय मनीषी सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक जीवन में उन केन्द्रों से धधकती हुई विकराल दावानल की लपटें बन गयी थी। बिहार में इस आन्दोलन का श्रीगणेश देवघर के निकट हुआ, जहाँ सिपाहियों ने अपने अंग्रेज पदाधिकारियों को गोली से भून दिया। रोहिणी में थल सेना के 32 वें रेजिडेन्ट का मुख्यालय था। जिसके कमान के प्रभावी थे मेजर मेकडोनाल्ड। सैनिकों ने अपनी गोली का निशाना बनाकर मेजर लेस्की को मार कर यह सन्देश सम्पूर्ण भारतीयों तक पहुँचाया तथा सात

समुन्दर दूर बैठे अंग्रेजों के आका को भी पहुँचाया। बाद में इस रेजिडेन्ट का मुख्यालय रोहिणी से भागलपुर लाया गया। विद्रोह भागलपुर में भी हुआ, किन्तु क्रान्तिकारी सरकार के हाथ से निकल भागे। देखते ही देखते यह क्रान्ति सम्पूर्ण बिहार में आग की लपट की तरह फैल गया। मधेपुरा मध्य क्षेत्र होने के कारण इस क्षेत्र में भी एकाएक आन्दोलन की लपट तेज हो गयी तथा वहाँ के सर्वसाधारण के मन में यह बात घर कर गयी कि और कम्पनी सरकार का अन्त हो रहा है। (सहरसा), कटैया (सुपौल), हुलास (सुपौल), भैरोपट्टी (मधेपुरा), बमनी (मधेपुरा), बैजनाथपुर (सहरसा), तरैया (सहरसा), मुखल्ला (मधेपुरा), बिसनपुर (मधेपुरा), बभनगामा, भवानीपुर (मधेपुरा), पतरघट (सहरसा), गोबरगढ़ा (सहरसा), परमानन्दपुर (मधेपुरा), लतौना (सुपौल), काशनगर (सहरसा), नरदह चौरा (मधेपुरा), तुलसिया (मधेपुरा), आदि स्थानों में कार्यरत थे। ये यूरोपीय नीलते साहब कहलाते थे। साधारण कृषकों पर इनका अत्याचार कम लोमहर्षक नहीं था।

अन्य क्षेत्रों की तरह मधेपुरा भी कुशासन के विरूद्ध सुलग रहा था। वह एकाएक 1857 में तीव्र हो उठा। प्रशासन को यह सूचना थी कि ढ़ाका के विद्रोही पूर्णिया और मधेपुरा होकर मुजफरपुर में प्रवेश कर रहे हैं। 5 सितम्बर 1857 को एच0 एल0 डेम्पीय नामक एक कठोर अंग्रेज अफसर को मुजफरपुर में नियुक्त किया गया। वह नील साहबों को सुरक्षा के लिए अधिक मजिस्ट्रेट चिन्तित था। ज्ञातव्य है कि इस क्षेत्र में 1830 ई0 से 1860 ई0 तक यूरोपीयनों ने नील की खेती आरम्भ कर दी थी। नील के कारखाने भवनियाँ, गोविन्दपुर, सिंहेश्वर, राजपुर, पिपरा, सिमराहा, मंडल सहित इसी वर्ष सोनपुर में बिहार की प्रथम कांग्रेस अधिवेशन में भी भाग लिये। इसी प्रकार इलाहाबाद की कांग्रेस की 25 वीं बैठक में इनके नेतृत्व में भाग लेने वाले अन्य सदस्यों के नाम इस प्रकार है– बाबूलाल मंडल, राजा हसन मुख्तार, विश्वनाथ झा।

सन्दर्भ सूची :–

1. उमेश मिश्र (क) मिथिला का समाज और सभ्यता – दरभंगा–1976
   (ख) मिथिलाक संस्कृति और सभ्यता – पटना–1965
2. उपेन्द्र ठाकुर (क) स्टडीज इन जैनिज्म एवं बुद्धिज्म इन मिथिला– चौखंभा सीरीज वाराणसी–1964
   (ख) मिथिला का इतिहास – मैथिली एकादमी, पटना–1980
3. डॉ0 एस0 एल0 वरे – इतिहास लेखन की अवधारणा, 1 जनवरी 2015, कैलाश पुस्तक, सदन, भोपाल
4. कोसी साहित्य – 09 अगस्त 2012
5. देवेन्द्र कुमार देवेश, कोशी अंचल की साहित्यिक विरासत, प्रथम खंड–2009